चार्ली की दास्तां

विनोद कुमार

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने
'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है।
इस आंदोलन का मकसद आम जनता में
पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

चार्ली की दास्तां विनोद कुमार	***Charlie Ki Dastan*** **Vinod Kumar**
पुस्तकमाला संपादक तापोश चक्रवर्ती	***Series Editor*** **Taposh Chakravorty**
कॉपी संपादक राधेश्याम मंगोलपुरी	***Copy Editor*** **Radheshyam Mangolpuri**
कवर एवं ग्राफिक्स जगमोहन	***Cover and Graphics*** **Jagmohan**
प्रथम संस्करण सितम्बर, 2007	***First Edition*** **September, 2007**
सहयोग राशि 20 रुपये	***Contribution*** **Rs. 20**
मुद्रण सन शाइन ऑफसेट नई दिल्ली - 110 018	***Printing*** **Sun Shine Offset** **New Delhi - 110 018**

Publication and Distribution

Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110 017

Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773

Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

website: www. bgvs.org

BGVS SEPTEMBER 2007 2K 2000 NJVA 0060/2007

हम लेखकों के विचारों की स्वतंत्रता में विश्वास करते हैं, सहमति/असहमति अलग बात है।

चार्ली की दास्तां

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

4

चार्ली की दास्तां

एक दुखी, उदास बच्चा
एक दिन सारी दुनिया को
हंसा-हंसाकर लोटपोट कर देता है
वो केवल हंसाता ही नहीं,
हंसाते-हंसाते रुलाता भी है···
वो बोलता नहीं लेकिन
उसकी चुप्पी, उसका चलना, उसका गिरना-मुड़ना,
उसकी तेजी सब कुछ बयां कर जाते हैं।
उसकी आंखें बोलती हैं··· उनमें प्रेम है,
गुस्सा, दुख और त्रासदी है।
वो उम्मीद और चंचलता का चितेरा है,
प्रतिरोध और संघर्ष ही उसका जीवन-संदेश है···।

उसका अदना-सा शरीर सिनेमा के संसार का ऐसा आईना है जो शायद कभी धुंधला न हो। वह और कोई नहीं, दुनिया के महानतम अभिनेता और फिल्म-निर्देशक चार्ली चैप्लिन थे, जिनका पूरा जीवन दुनिया को हंसी और आशा देने में बीता। चार्ल्स स्पेंसर चैप्लिन का जन्म विक्टोरिया काल के लंदन के ईस्ट लेन इलाके में एक गरीब परिवार में 16 अप्रैल 1889 को हुआ। वे अपनी माता हाना और पिता

चार्ल्स की दूसरी संतान थे। चैप्लिन के बड़े भाई सिडनी थे। चैप्लिन के माता-पिता थियेटरों में गाना गाकर अपना जीवन-यापन करते थे। ब्रिटेन के इतिहास में यह ऐसा काल था जब महारानी विक्टोरिया की तिजोरियां धन-संपदा से भरी पड़ी थीं। वह समृद्ध तथा शक्तिशाली थीं। लूट पर टिका उनका साम्राज्य दुनिया भर में फैला था।

बचपन की त्रासदी

दुनिया भर से लूट-लूटकर जमा की गई असीम संपदा के बावजूद ब्रिटेन में भीषण गरीबी के हालात थे। धनवानों को इन गरीबों की बिल्कुल फिक्र न थी। ऐसे ही काल में अपनी मां हाना के साथ लंदन की सड़कों पर घूमते हुए बचपन में ही चार्ली ने अपने चारों ओर घोर दरिद्रता देखी– अधनंगे बच्चे, भिखारी, भुखमरी का आलम। चार्ली ने यह सब देखा ही नहीं, भोगा भी। किशोरावस्था में उसने बेसहारापन, भुखमरी, मां की बीमारी और अपने शराबी पिता को झेला। वह ठोकरों पर ठोकरें खाता रहा। चार्ली के माता-पिता के बीच जब वैवाहिक संबंध खत्म हुए उस समय वह महज साढ़े तीन वर्ष का नन्हा बालक था। ऐसे में दोनों बच्चों को पालने-पोसने की पूरी जिम्मेदारी अकेले हाना पर आ गई थी। त्रासदीपूर्ण हालात के बावजूद हाना बच्चों को बहुत स्नेह करती थी।

कभी-कभी हाना बहुत निराशा और गुस्से में होती तो कहती, "तुम भी अपने बाप की तरह गटर में ही गिरकर खत्म होगे।" लेकिन उसने अपने बच्चों को जिन्दा रखने के लिए जो बन पड़ा, वह किया। बाद में वह बीमार रहने लगी। उसका चिड़चिड़ापन उसे बदहवासी की ओर ले जा रहा था।

एक कलाकार का जन्म

चार्ली 5 वर्ष का हो चुका था। वह अपनी मां के साथ अकसर थिएटर जाता था। एक दिन गाते-गाते हाना की आवाज खराब हो गई। स्टेज के पीछे हाना और मैनेजर में बहस जारी थी। यह सब देखकर वह दोनों के पास गया। मैनेजर ने चार्ली को स्टेज पर जाने के लिए

कहा। उसने कई बार चार्ली को अपने दोस्तों के बीच करतब करते हुए देखा था। काफी जिद के बाद चार्ली को स्टेज पर जाना ही पड़ा। हाना डर गई, वह सोचने लगी– मेरा प्यारा अबोध चार्ली इस उग्र भीड़ को कैसे झेल पाएगा? मैनेजर चार्ली को स्टेज पर अकेला ही छोड़ आया। चार्ली ने जैक जोन्स गाना शुरू किया। गाना अभी आधा ही हुआ था कि स्टेज पर पैसे की बौछार शुरू हो गई। चार्ली ने गाना रोकते हुए कहा कि पहले मैं पैसे उठाऊंगा तब गाऊंगा। इस बात पर हॉल हंसी के ठहाकों से गूंज उठा। फिर चार्ली नाचा, मां की नकल उतारी। इस पर देर तक पूरा हॉल हंसी के ठहाकों से गूंजता रहा। कई लोगों ने हाना से हाथ मिलाकर चार्ली की तारीफ की। चार्ली का कलाकार के रूप में यह नया जन्म था। उसका पहला शो मां का अन्तिम शो साबित हुआ। हाना की आवाज दुबारा वापस नहीं लौटी। वह कपड़े सिलने लगी। सिडनी अखबार बेचता था। किसी तरह जिंदगी चल रही थी।

स्कूल में दाखिला

7 साल की उम्र में चार्ली और उसके बड़े भाई सिडनी को गरीबों के स्कूल हानवेल में दाखिला मिला। दो वर्ष के अन्दर ही चार्ली की पढ़ाई छूट गई। इसी बीच हाना बहुत ज्यादा बीमार हो गई। उसे पागल-खाने में भर्ती होना पड़ा। इस तरह उतार-चढ़ाव भरी त्रासद जिंदगी चलती रही। चार्ली शराबखाने में फूल बेचने लगा। यह काम अच्छा चलने लगा। एक दिन मां हाना ने उसे शराबखाने से बाहर निकलते देख लिया। उसे यह बर्दाश्त नहीं हुआ कि उसका बेटा शराबखाने में फूल बेचे। हाना ने गुस्सा होते हुए चार्ली से कहा, "शराब ने तुम्हारे बाप की जान ले ली। अब उस शराबखाने से कमाए पैसे से हमारे दिन ठीक होंगे, यह नहीं चलेगा।" इसके बाद चाहे जितनी तंगहाली रही हो, हाना ने कभी उसे फूल नहीं बेचने दिए। मां के जीवन, उसके संघर्ष करने की क्षमता और पवित्रता का असर चार्ली

के बचपन के दिलो-दिमाग पर गहराई से पड़ा। बड़े होने पर चार्ली ने एक बार कहा, "मैं आज जो कुछ भी हूं, सिर्फ अपनी मां की बदौलत।"

नाटकों की दुनिया में प्रवेश

चार्ली का जीवन त्रासदीपूर्ण जरूर था, लेकिन वह हरदम खुश रहने की कोशिश करता। वह शायद गरीबी के सामाजिक अर्थ को समझने लगा था। वह जानता था कि जो सबसे गरीब लोग हैं, वे भी रविवार के दिन अपने घर पर पका हुआ खाना खाते हैं। गोश्त ऐसी वस्तु था जो गरीब को अमीर से अलग करता था। रविवार को जो अपने घर नहीं खा सकते थे, उन्हें दरिद्रों के वर्ग में रखा जाता था। चार्ली भी इसी वर्ग का हिस्सा था। उसे अपनी यह दरिद्रता बहुत शर्मनाक लगती थी। इस सबके बावजूद वह आगे बढ़ता रहा। उसने नाटक की दुनिया में औपचारिक रूप से प्रवेश किया। इस समय वह करीब 14 वर्ष का था । ***जिम : ए रोमांस ऑफ काकेन*** नाटक में उसने पहली बार सैम का किरदार निभाया ।

27 जुलाई 1903 को लंदन में शर्लाक होम्स के नाटक में चार्ली ने बैल ब्वाय का किरदार निभाया। इस किरदार के हर एक डायलॉग पर तालियां बजीं। इस नाटक में चार्ली के अभिनय की तारीफ करते हुए ***लंदन टॉपिकल टाइम्स*** की समीक्षा में लिखा था, "लड़के का नाम पहले तो कभी नहीं सुना गया, पर भविष्य में यह लड़का जरूर महान उपलब्धियां हासिल करेगा।" नाटक की रिहर्सल और शो चलते रहे। मां हाना अस्पताल में भर्ती थी। बीच-बीच में चार्ली अपने बड़े भाई सिडनी के साथ मां को देखने अस्पताल जाता। हम चार्ली और सिडनी की उम्र में सोचकर देखें कि वे अबोध बालक त्रासदियों से लड़ते हुए किस आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहे थे।

भाई के साथ संबंध

इसी बीच चार्ली और सिडनी को रोजगार के लिए अलग-अलग रहना पड़ा। सिडनी प्रायः चार्ली को पत्र लिखता। सिडनी के एक पत्र

ने उसे झकझोर दिया! सिडनी ने लिखा- "जब से मां बीमार हुई, दुनिया में हम दोनों को सिर्फ एक-दूसरे का ही सहारा है। तुम मुझे बराबर खत लिखा करो ताकि मुझे यह महसूस होता रहे कि हां, मेरा भी एक भाई है।" चार्ली ने इस पत्र का जवाब बहुत भावुकतापूर्ण ढंग से दिया। सिडनी चार्ली को बचपन में "मेरा बेटा" कहकर पुकारता था। दोनों के बीच गहरा संबंध था, जो जीवनभर कायम रहा।

अमेरिका की ओर कदम

1910 की एक सुबह अपने सो रहे भाई सिडनी के पास एक पर्ची रखकर (जिसमें लिखा था- "अमेरिका रवाना हो रहा हूं, खत लिखता रहूंगा- चार्ली") चार्ली फ्रेड कार्नो के साथ अमेरिका की ओर चल पड़ा। करीब 14 दिनों के सफर के बाद चार्ली न्यूयॉर्क शहर में था। यह रफ्तार का शहर था। यह व्यापार का शहर था। चारों तरफ ऊंची-ऊंची इमारतें थीं। लेकिन यह सब होने का मतलब यह नहीं था कि यहां सब कुछ अच्छा था। यहां साधारण लोगों के लिए कोई जगह नहीं थी। वे हर गली और सड़क के किनारे नाउम्मीदी में जी रहे थे। यहीं एक तंग, अंधेरी, गंदी बस्ती में चार्ली ने एक कमरा ले लिया। तकरीबन 21 माह तक चार्ली कार्नो की कंपनी के साथ अमेरिका में रहे। कई नाटकों के उतार-चढ़ाव भरे प्रदर्शनों के बाद वे लंदन वापस लौटे। कुल मिलाकर यह दौरा ठीक-ठाक ही रहा।

प्रेम और वैवाहिक जीवन के उतार-चढ़ाव

1914 तक आते-आते चार्ली 25 साल के हो चुके थे। लेकिन उनके जीवन में कोई प्रेमिका नहीं थी। उन्हें अपने काम में तो सफलताएं मिल रही थीं, लेकिन उनके जीवन में कोई दूजा नहीं था जिसके साथ वे दो पल सुकून से अपनी जिंदगी के सुख-दुख बांट

सकें। पहले-पहल उनकी मुलाकात पैगी पियर्स से हुई। उनमें मेलजोल बढ़ता गया। चार्ली को लगा कि वह उनसे प्यार करती है। दर्जनों बार चार्ली ने अपनी ओर से प्रेम का इजहार किया, पर पैगी हमेशा चुप रही। बार-बार प्यार का इजहार करते-करते वह थक गए। वैसे भी प्यार के मामले में वे हमेशा संकोची थे।

इसी बीच चार्ली के जीवन में उनकी ही फिल्म की नायिका एडना पर्विएंस का आगाज हुआ। एडना बहुत सुन्दर ही नहीं, बहुत बुद्धिमान भी थी। एडना चार्ली के हर पल का बहुत संजीदगी से ख्याल रखती थी, लेकिन आपस की कुछ गलतफहमियों की वजह से यह प्यार भी परवान नहीं चढ़ सका।

1918 में 29 साल की उम्र में मिल्ड्रेड हैरिड के साथ चार्ली विवाह-बंधन में बंधे। लेकिन दो साल बीतते-बीतते मिल्ड्रेड और चार्ली का तलाक हो गया। इसकी एक बड़ी वजह चार्ली पर अपने काम का भारी बोझ था। वे काम के इतने दबाव में थे कि मिल्ड्रेड के प्यार से दूर होते गए।

1924 में चार्ली के जीवन में लिटाग्रे नाम की एक और लड़की आई। दोनों ने विवाह किया। इस बीच दो बेटों (चार्ल्स स्पेंसर जूनियर और सिडनी अर्ल चैप्लिन) का जन्म हुआ। निजी जिंदगी का एक और त्रासद अंत। 1927 में दोनों के बीच तलाक हो गया। 1936 में एक बार फिर पोलेंट गोडेर्ड से चार्ली ने विवाह किया। इस संबंध का अंत भी 1942 में हो गया।

कई सारी निजी और सामाजिक कठिनाइयों के बीच 1942 में उनकी मुलाकात ऊना नाम की एक ऐसी लड़की से हुई जो महज साढ़े सतरह साल की थी। ऊना प्रसिद्ध अमेरिकी नाटककार यूजीन ओ नील की बेटी थी। ऊना के चेहरे की चमक, सौम्यता और शर्मीलापन उसे अलग पहचान देते थे। वे दोनों एक-दूसरे को बेइंतहा प्यार करने लगे। ऊना के पिता द्वारा भारी विरोध किए जाने के बावजूद 18 वर्ष की उम्र पूरी होने पर ऊना और 54 वर्ष के चार्ली के बीच अन्ततः विवाह हो

गया। चार्ली और ऊना ने 34 साल तक सुखद वैवाहिक जीवन गुजारा। इस बीच दोनों के आठ बच्चे हुए। कुल मिलाकर चार्ली की निजी जिंदगी में प्यार, विवाह व तलाक अहम हिस्सा बने रहे। ऐसा भी नहीं था कि इस सबके लिए केवल चार्ली ही जिम्मेदार थे। तलाक के प्रमुख कारणों में चार्ली का अपने काम की अपेक्षा वैवाहिक संबंध पर कम ध्यान देना था। साथ ही वे जितना प्रसिद्ध और धनवान थे, उससे कहीं ज्यादा वे भोले-भाले इंसान थे। इस वजह से भी उनके जीवन में जो (ऊना को छोड़कर) आया, उसकी कुछ अलग ही महत्वाकांक्षाएं थीं।

एक अलग छवि

अमेरिका की ओर दुबारा रुख करने के दौरान चार्ली ने अपनी एक अलग छवि गढ़ने का मन बनाया। वह एक अदना-सा इंसान था। न तो उसका चेहरा सुंदर था, न ही वह डीलडौल-भरी कद-काठी का मालिक था। वह अपने लिए चुनता है एक हैट, एक कसा हुआ कोट, बड़े साइज की एक ढीली-ढाली पतलून, बड़े-बड़े जूते और हाथ में एक छड़ी। सब मिलाकर चार्ली एक अजीबोगरीब छवि के साथ सबके सामने था। उसे शायद यह छवि गढ़ते वक्त मालूम नहीं रहा होगा कि उसका यह रूप उसे एक दिन दुनिया भर में अविस्मरणीय और विख्यात कर देगा। उसकी इस छवि में संवेदना भी थी और मानवीयता भी। उसकी छवि एक तेज-तर्रार, अल्हड़, प्यारे और मासूम इंसान की थी। यह इंसान दर-दर की ठोकरें खाते हुए अपनी गरिमा को बनाने के लिए साहसपूर्वक संघर्ष करते हुए आगे बढ़ता है।

फिल्मों की ओर कदम

वर्ष 1913 में एक बार फिर न्यूयॉर्क का सफर। इस बार चार्ली

ज्यादा आशावान ही नहीं थे, बल्कि उनके दिमाग में कई सारी योजनाएं भी थीं। न्यूयॉर्क पहुंचकर चार्ली हालीवुड की ***कीस्टोन*** फिल्म कंपनी के सम्पर्क में आए। ***कीस्टोन*** से फिल्मों में काम करने का प्रस्ताव पाकर चार्ली मंत्रमुग्ध थे। शुरू-शुरू में वह थोड़ा घबराए हुए थे कि वह काम कर भी पाएंगे या नहीं। धीरे-धीरे वह समय आया जब चार्ली की पहली मूक फिल्म का आगाज हुआ। फरवरी 1914 में 45 मिनट की अवधि की ***मेकिंग ए लिविंग*** शीर्षक की फिल्म रिलीज हुई। निर्देशन की कई कमियों के बादजूद इस फिल्म को दर्शकों की सराहना मिली। खासकर, चार्ली को एक हंसाने वाले अभिनेता के रूप में लोग जानने लगे। अगले 10-12 सालों के दौरान उन्होंने कई सारी फिल्मों में अभिनय किया, साथ ही निर्देशन भी। इस दौर की कुछ प्रमुख फिल्में थीं- ***द ट्रैम्प, द इमिग्रेंट, शोल्डर आर्म्स, द किड, द गोल्ड रश***।

उनकी फिल्मों को आप देखें तो पाएंगे कि चार्ली हार नहीं मानते। उन्होंने अच्छों-अच्छों को और धनवानों को बेवकूफ बनाया। चार्ली ने अपने व्यंग बाणों से उनके वैभव, उनकी संपन्नता और अमानवीयता

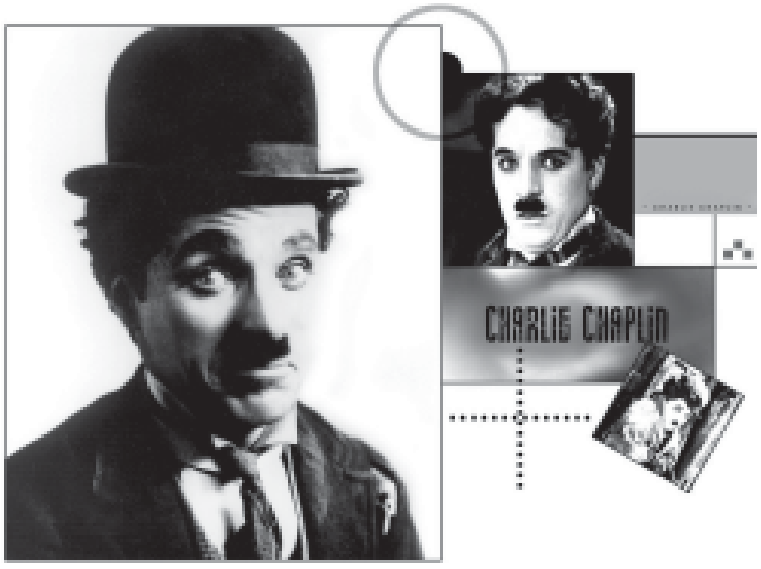

का मखौल जिस साहस और खूबी के साथ उड़ाया है, वह शायद सिनेमा के इतिहास में अद्‌भुत और बेमिसाल है। कई फिल्मों में वे मासूम बच्चों की तरह लगते हैं। लगता है, जैसे एक मासूम बच्चा अपनी कातर निगाहों से दुनिया को देख रहा है। अद्‌भुत! ऐसा नहीं है कि चार्ली केवल पैसे के लिए और बेमकसद यह सब कर रहे थे। चार्ली मासूमियत, उनकी आंखों में वेदना का सागर, उनका गरीबी और लाचारी में जिया गया जीवन– यह सब उनके दिलो-दिमाग में एक दृष्टिकोण को जन्म दे गया। वे हंसाते-हंसाते सबको रुला देते हैं। उनकी फिल्मों के दृश्यों में करुणा भी है, मानवीयता भी है, व्यंग भी है, साहस और उम्मीदें भी हैं। अपनी आत्मकथा में चार्ली ने लिखा है, "कॉमेडी में सबसे जरूरी जो चीज है वह है दृष्टिकोण। इसे तलाशना ही सबसे कठिन काम होता है। कहानी तो आ गई, लेकिन दृष्टिकोण नहीं आया तो उसका कोई मतलब नहीं।" इससे साफ होता है कि वे जो कुछ कर रहे थे वह बेवजह नहीं था। उनके पास एक नजरिया था। चार्ली की संवेदनाओं और विचारों की बेहतरीन अभिव्यक्ति उनकी फिल्मों में हुई।

मां का निधन

दि सर्कस फिल्म की शूटिंग के दौरान चार्ली को खबर मिली कि मां हाना की तबियत बहुत खराब हो गई है। वे अस्पताल में भर्ती थीं। उनकी स्थिति अर्द्ध-चेतनावस्था की थी। वे बहुत कम चीजों को पहचान पाती थीं। 28 अगस्त 1928 को उन्हें मां के निधन की खबर शूटिंग करने के दौरान मिली। हाना के जीवन में सिवाय संघर्षों के कुछ भी शेष नहीं था। वे जीवन-भर संघर्ष करती रहीं। शादी के बाद वे अदना से प्यार तक के लिए तरस गईं। पति छोड़कर चला गया। रोटी की खातिर वे दर-दर भटकीं। रोटी तो मिली, लेकिन वह इतनी नहीं थी कि उनके दोनों बच्चों और अपने लिए पर्याप्त हो। अपना पेट काटकर वे बच्चों को पालती रहीं। इससे उनकी हालत नाजुक हो गई। जब समय आया खुशी और आराम का, तब वे इतनी जर्जर हो चुकी थीं कि शायद वे चार्ली की प्रसिद्धि देखने से मुंह मोड़ चुकी थीं।

खुशहाल जीवन जीने के लिए जरूरी हिम्मत जवाब दे चुकी थी। चार्ली घंटों रोता रहा। अपनी मां के संबंध में चार्ली ने कहा, "मेरी मां न होती तो मैं नहीं समझ पाता कि मूक अभिनय क्या चीज है। आज जो कुछ भी मैं हूं उसके त्याग और संघर्ष की वजह से हूं।"

पुनः फिल्मों की ओर

मां के निधन के बाद चार्ली ने एक बार फिर हिम्मत बांधी। अगले चन्द वर्षों में उन्होंने तीन महान फिल्मों का निर्माण किया– ***सिटी लाइट्स, मुसियेर वेर्दू, मॉडर्न टाइम्स***, और ***द ग्रेट डिक्टेटर***। यह समय ऐसा था जब दुनिया पर युद्ध के बादल मंडरा रहे थे और पूंजीवाद एक संकट के दौर से गुजर रहा था। 1932 में जब वे लंदन से लौटे तो उन्हें यात्रा के दौरान चारों ओर फैली बेरोजगारी, गरीबी और अन्याय के प्रति चिन्ता सताने लगी। उन्होंने सोचा कि मैं क्या कर सकता हूं··· सिवाय फिल्में बनाने के।

इसी दौरान ***न्यूयॉर्क वर्ल्ड*** के एक रिपोर्टर ने उन्हें डेट्राइट की एक फैक्टरी के बारे में बताया। वहां काम इतने मशीनी ढंग से होता था कि कामगार अपना संतुलन खो बैठते थे। ***मॉडर्न टाइम्स*** का आइडिया यहीं से आया। मशीनें आजाद नहीं करतीं; किसी भी अच्छे-खासे दिमाग को गुलाम बना देती हैं– महात्मा गांधी की बातें रह-रहकर उनके कानों की सैर कर आतीं। उन्होंने खाना खिलानेवाली एक मशीन की कल्पना की। मालिकान सोचते हैं कि खाना खाने में कामगार आधा घंटा गंवाते हैं, कोई ऐसी मशीन बनाई जाए जो उन्हें काम करते-करते खाना खिला दे तो काफी समय बच सकता है। उस मशीन का परीक्षण चार्ली पर किया जाता है। मशीन बिगड़ जाती है। वह चार्ली को नट-बोल्ट खिला-खिलाकर पीट देती है। चार्ली संतुलन खो बैठता है। पागलखाने से निकलने के बाद वह सड़क पर चल रहा होता है कि एक गाड़ी

से लाल झंडा गिर जाता है। उसे नहीं पता कि उसके पीछे मजदूरों का जुलूस आ रहा है। पुलिस उसे नेता समझ लेती है और जेल भेज देती है।

मॉडर्न टाइम्स भी एक कॉमेडी थी। इसके माध्यम से चार्ली ने अमेरिका में बेरोजगारी से जूझ रहे तकरीबन 50 लाख लोगों की भावनाओं को अभिव्यक्ति दी थी। यह फिल्म मशीन से पैसा कमाने की शोषण-भरी पूंजीवादी व्यवस्था पर करारा प्रहार थी। ***मॉडर्न टाइम्स*** भले ही आज से 60 वर्ष पहले बनी थी, लेकिन 21 वीं सदी में भी जिस तरह पूंजीवादी व्यवस्था ने बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के माध्यम से लूट की सत्ता कायम की है, उसके प्रतिरोध में इस फिल्म की प्रासंगिकता आज भी सिद्ध होती है। ऐसा भी नहीं कि चार्ली मशीनों के खिलाफ थे। वे तो मशीनों को लूट का माध्यम बनाने के खिलाफ थे। महात्मा गांधी से मुलाकात के दौरान चार्ली ने एक बार कहा था, "जहां तक मेरा मानना है, यदि मशीनों का रचनात्मक इस्तेमाल किया जाए तो आदमी गुलामी से बच सकता है। उसके काम के घंटे कम हो सकते हैं और ज्यादा मनोरंजनपूर्वक जीवन गुजारा जा सकता है।" इस फिल्म पर कुछ समय बाद हुई चर्चाओं में इस कथन को सबूत के रूप में देखा गया कि चार्ली कम्युनिस्ट थे।

इसी बीच चार्ली ने ***मुसिएर वेर्दू*** फिल्म का निर्माण किया। जब यह फिल्म सेन्सर बोर्ड के पास पहुंची तो उसे कुछ दृश्यों पर ही नहीं, बल्कि पूरी फिल्म पर ऐतराज था। "वेर्दू दरअसल एक बैंक क्लर्क है जो आर्थिक मंदी के दौरान अपनी नौकरी खो बैठता है। पैसों की तंगी के कारण वह एक अमीर, लेकिन उम्रदराज महिला से शादी करता है। फिर वह पैसों के लिए उसकी हत्या कर देता है। पैसा कमाने का यह तरीका उसे अमेरिकी समाज में उपलबध अन्य सुविधाओं के बनिस्बत ज्यादा सरल लगता है। वह लगातार शादियां करता है और हत्याएं भी। उसकी असली पत्नी गांव में रहती है और वह उसके कातिल रूप से नावाकिफ है। हर हत्या के बाद वह कुछ समय के लिए उसके पास चला जाता है।" चार्ली ने इस फिल्म को 'कॉमेडी

ऑफ मर्डर्स' कहा था।

सेंसर बोर्ड को इस फिल्म की बहुत सारी बातों पर आपत्ति थी। वरडॉक्स अपने अपराधों का स्पष्टीकरण देते हुए कहता है, "दुनिया विश्वयुद्ध करके सामूहिक नरसंहार की संख्या में इजाफा कर रही है। ऐसे में कुछ पैसों के लिए मेरे द्वारा की गई हत्याएं महज मजाक हैं।"

सेंसर बोर्ड के सदस्यों में युद्ध को लेकर बहस हो गई। चार्ली की नजर में युद्ध सामूहिक नरसंहार था तो सेंसर बोर्ड की नजर में यह भले उद्देश्यों को लेकर की गई पवित्र और जायज लड़ाई। हिंसा को इतने आसान ढंग से लेने के चार्ली के नजरिए पर भी बोर्ड नाखुश था। चार्ली सेंसर बोर्ड के संशोधन प्रस्तावों पर कुछ हद तक राजी हो गए। ***मुसियेर वेर्दू*** न्यूयार्क के सिनेमा घरों में रिलीज हुई। फिल्म पर प्रतिक्रियाएं बहुत अजीबोगरीब थीं। अखबार उसके पीछे पड़े थे। अखबार के पन्नों पर ***मुसियेर वर्दू*** के पोस्टरों के आगे लोग तख्तियां लेकर खड़े थे :

चार्ली विदेशी है। देश से भगा दो।

चार्ली कम्युनिस्टों का समर्थक है, यह देशद्रोही है। इसे रूस भेज दो।

द्वितीय विश्व युद्ध का दौर

1938 के आस-पास का समय। जर्मनी में सत्ता नाजी पार्टी के हिटलर के हाथ में आ गई थी। नस्ल के शुद्धीकरण के नाम पर यहूदियों की सामूहिक हत्याओं की योजना बननी शुरू हो गई थी। हिटलर अनुशासित और विशालतम रैलियों के माध्यम से जर्मन लोगों के अन्दर ऐसी देशभक्ति और महत्वाकांक्षा का उन्माद पैदा कर रहा था जो लोगों को पागल किए था। पूरा जर्मनी नाजीवाद की चपेट में था। अक्टूबर 1938 में चार्ली ने फिल्म ***द ग्रेट डिक्टेटर*** पर काम शुरू किया। कुछ लोगों ने मशविरा दिया कि वे खतरा मोल न लें, क्योंकि यह फिल्म न इंग्लैंड में रिलीज हो पाएगी, न अमेरिका में। लेकिन चार्ली अपनी ही धुन में थे। उन्होंने तय किया कि वे फिल्म जरूर

बनाएंगे, क्योंकि यह मानवता के हक में और युद्ध के खिलाफ है। चार्ली ***द ग्रेट डिक्टेटर*** के माध्यम से हिटलर के सम्मोहनकारी चेहरे के पीछे छिपी क्रूरता को दुनिया के सामने लाना चाहते थे। फिल्म-निर्माण के दौरान दुनिया के कई कोनों से उन्हें धमकी भरे खत मिल रहे थे। कोई स्टूडियो पर बम फेंकने की बात कर रहा था, तो कोई थिएटर जलाने की।

उन्होंने इस फिल्म में तानाशाह हाइन्केल और एक यहूदी दर्जी दोनों का किरदार निभाया। इसमें हिटलर का खूब मजाक उड़ाया गया। फिल्म में छोटा-सा दर्जी हाइन्केल की जगह लम्बा भाषण देता है जिसमें वह सेनाओं से कहता है, "विवेक से काम लो। हमें विवेक से परिपूर्ण दुनिया बनाने के लिए लड़ना चाहिए। ऐसी दुनिया जिसमें विज्ञान और प्रगति से मानवता की खुशहाली की दिशा में मार्ग प्रशस्त हो। सैनिको, हमें जनतंत्र के नाम पर संगठित होना चाहिए।" फिल्म को अमेरिका में सराहा गया, लेकिन चार्ली ने इसमें जो कुछ भी कहा था उस पर कई लोगों को भारी ऐतराज था। उनके अनुसार, फिल्म के अन्त में कही गई बातें कम्युनिज्म का समर्थन करती हैं।

द ग्रेट डिक्टेटर का आखिरी भाषण

मुझे माफ कीजिएगा, मैं कोई सम्राट नहीं बनना चाहता। यह मेरा काम नहीं है। मैं किसी पर शासन करना या किसी को जीतना नहीं चाहता। मैं हर किसी की– यहूदी, जेंटाइल, काले-सफेद सबकी– हर संभव सहायता करना चाहता हूं··· हम सब एक-दूसरे की सहायता करना चाहते हैं। आदमी ऐसा ही होता है। हम एक-दूसरे की खुशियों के सहारे जीना चाहते हैं; दुखों के सहारे नहीं। हम आपस में नफरत और अपमान नहीं चाहते। इस दुनिया में हर किसी के लिए जगह है। यह प्यारी पृथ्वी पर्याप्त संपन्न है और हर किसी को दे सकती है ।

जिंदगी का रास्ता आजाद और खूबसूरत हो सकता है, पर हम वह रास्ता भटक गए हैं। लोभ ने मनुष्य की आत्मा को विषैला कर दिया है··· दुनिया को नफरत की बाड़ से घेर दिया है··· हमें तेज कदमों से

पीड़ा और खून-खराबे के बीच झटक दिया गया है। हमने गति का विकास कर लिया है, लेकिन खुद को बंद कर लिया है। इफरात वस्तुएं पैदा करने वाली मशीनों ने हमें अनंत इच्छाओं के समंदर में गिरा दिया है। हमारे ज्ञान ने हमें सनकी व आत्महंता बना दिया है और हमारी चतुराई ने हमें कठोर और बेरहम। हम सोचते बहुत ज्यादा हैं और महसूस बहुत कम करते हैं। मशीनों से ज्यादा हमें जरूरत है इंसानियत की, चतुराई से ज्यादा हमें जरूरत है दया और सज्जनता की। इन गुणों के बिना जिंदगी खूंखार हो जाएगी और सब कुछ खो जाएगा।

हवाई जहाज और रेडियो ने हमें और करीब ला दिया है। इन चीजों का मूल स्वभाव मनुष्य में अच्छाई लाने के लिए चीख रहा है··· सार्वभौमिक बंधुत्व के लिए चीख रहा है··· हम सबकी एकता के लिए। यहां तक कि इस वक्त मेरी आवाज दुनिया के दसियों लाख लोगों तक पहुंच रही है··· दसियों लाख हताश पुरुषों-स्त्रियों और छोटे बच्चों तक··· एक ऐसी व्यवस्था के शिकार लोगों तक जो आदमी को, निरपराध मासूम लोगों को कैद करने और यातना देने का सबक पढ़ाती है। जो लोग मुझे सुन रहे हैं, मैं उनसे कहूंगा, निराश मत हो। पीड़ा का यह दौर जो गुजर रहा है, लोभ की यात्रा है··· उस आदमी की कड़ुआहट है जो मानवीय उन्नति से घबराता है। इंसान की नफरतें खत्म हो जाएंगी और तानाशाह मर जाएंगे; और जिस सत्ता को उन्होंने छीना है, वह सत्ता जनता को मिल जाएगी और जब तक लोग मरते रहेंगे, आजादी पुख्ता नहीं हो पाएगी।

सैनिको, अपने-आप को इन धोखेबाजों के हवाले मत करो, जो तुम्हारा अपमान करते हैं··· जो तुम्हें गुलाम बनाते हैं··· जो तुम्हारी जिंदगी को संचालित करते हैं··· तुम्हें बताते हैं कि क्या करना है, क्या सोचना है और क्या महसूस करना है! जो तुम्हारी कवायद करवाते हैं, तुम्हें खिलाते हैं··· जानवरों-सा व्यवहार करते हैं और अपनी तोपों का चारा बनाते हैं। खुद को इन अप्राकृतिक लोगों, मशीनी दिमाग और मशीनी दिलों वाले मशीनी आदमियों के हवाले मत करो···। तुम लोग इंसान हो, तुम्हारे दिलों में इंसानियत है, घृणा मत करो। घृणा करनी ही

है, तो बिना प्रेम वाली नफरत से करो··· बिना प्रेम की, अनैसर्गिक!

सैनिको! गुलामी के लिए मत लड़ो, आजादी के लिए लड़ो। सेंट ल्यूक के सत्रहवें अध्याय में लिखा है कि ईश्वर का राज्य आदमी के भीतर होता है··· किसी एक आदमी या किसी एक समुदाय के आदमी के भीतर नहीं, बल्कि हर आदमी के भीतर! तुममें··· आप सब लोगों में··· जनता के पास ताकत है इस जिंदगी को आजाद और खूबसूरत बनाने की, साहस है इस दुनिया को एक अद्‌भुत दुनिया में तब्दील करने की, तो लोकतंत्र के नाम पर हम उस ताकत का इस्तेमाल करें··· आओ, हम सब एक हो जाएं, हम एक नई दुनिया के लिए संघर्ष करें, एक ऐसी सभ्य दुनिया के लिए जो हर आदमी को काम करने का मौका दे··· तरुणों को भविष्य दे और बुजुर्गों को दे सुरक्षा।

इन्हीं चीजों का वादा करके इन धोखेबाजों ने सत्ता हथिया ली। लेकिन वे झूठे हैं, वे अपना वादा पूरा नहीं करते, वे कभी नहीं करेंगे। तानाशाह खुद को आजाद कर लेते हैं, लेकिन जनता को गुलाम बना देते हैं। हम दुनिया को आजाद करने की लड़ाई लड़ें··· राष्ट्रीय बाड़ों को हटा देने की लड़ाई; लोभ, नफरत व असहिष्णुता को उखाड़ फेंकने की लड़ाई! एक ऐसी दुनिया के लिए लड़ें, जहां विज्ञान और उन्नति हम सबके लिए खुशियां लेकर आए। सैनिको, लोकतंत्र के नाम पर हम सब एक हो जाएं।

हाना, क्या तुम मुझे सुन सकती हो? तुम जहां कहीं भी हो, देखो यहां! देखो यहां, हाना! ये बादल छंट गए हैं, पौ फट रही है, हम अंधेरे से निकलकर उजाले में आ रहे हैं, हम एक नई दुनिया में आ रहे हैं··· एक ज्यादा रहमदिल दुनिया में··· जहां आदमी अपने लालच, घृणा और नृशंसता से ऊपर उठेगा। देखो हाना, मनुष्य की आत्मा को पंख मिल गए हैं और अंततः उसने उड़ने की शुरुआत कर दी है। वह इन्द्रधनुष में उड़ रहा है··· उम्मीदों की रोशनी में··· देखो हाना! देखो!

कम्युनिस्ट नहीं, मगर…

वर्ष 1945 में चार्ली ने ***मुसिएर वेर्दू*** नाम से एक विचित्र कॉमेडी फिल्म का निर्माण किया। इस फिल्म में चार्ली एक पके बालों वाले भद्र पुरुष के वेश में आता है। यह औरतों का हत्यारा है, हथियारों का निर्माता है और एक सम्मानित व्यवसायी भी है, भले ही वह हजारों-हजार लोगों की मौत का जिम्मेदार है। वेर्दू को मृत्युदण्ड देने की घोषणा होती है, लेकिन हथियारों का यह निर्माता पहले की तरह अपना धंधा जारी रखता है। इस फिल्म के बारे में पत्रकार सवाल करने की बजाय चार्ली पर कम्युनिस्टों के साथ सहानुभूति रखने के आरोप लगा रहे थे। चार्ली ने सवालों के जवाब बहुत संयम और विवेकपूर्ण ढंग से दिए। लेकिन पत्रकारों ने इसपर कोई ध्यान नहीं दिया। चार्ली ने सदैव और सबसे पहले अपने को विश्व का नागरिक माना। उन्होंने साफ-साफ कहा, "मैं कम्युनिस्ट नहीं हूं। मैं तो एक शांतिप्रेमी हूं।" साथ ही साथ खुफिया एजेन्सी एफ.बी.आई. के सामने लंबी चली पूछताछ के दौरान उन्होंने कम्युनिस्टों से नफरत करने से साफ इन्कार कर दिया।

चार्ली चैपलिन की फिल्में

1914 1. बिट्वीन शावर्स
2. ए बिजी डे
3. कौट इन ए कैबरे
4. कौट इन द रेन
5. क्रुएल क्रुएल लव

6. डी एण्ड डायनामाइट
7. द फेस ऑन द बाररूम प्लोर
8. ए फिल्म जौनी
9. जेन्टलमेन ऑफ नेर्व
10. गेटिंग एक्वेन्टेड

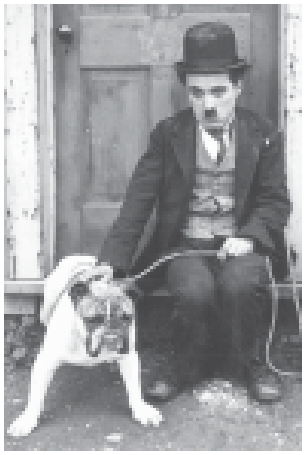

11. हर फ्रेंड द बैण्डिट
12. हिज फेवरिट पासटाइम
13. हिज न्यू प्रोफेशन
14. हिज प्रीहिस्टोरिक पास्ट
15. हिज रिजेनेरेशन
16. किड ऑटो रेसेज एट वेनिस
17. द नौकाउट
18. लाफिंग गैस

19. मेबल एट द व्हील
20. मेबल्स बिजी डे
21. मेबल्स मैरिड लाइफ
22. मेबल्स पंक्चर्ड रोमांस
23. प्रेडिकामेन्ट
24. मेकिंग अ लिविंग
25. द मास्क्वेरेडर
26. द न्यू जैनिटर
27. द प्रोपर्टी मैन
28. रिक्रिएशन
29. द राउंडर्स
30. द स्टार बोर्डर
31. टैंगो टैंगल्स
32. दोज लव पैंग्स
33. टिलीज पंक्चर्ड रोमांस

34. ट्वेंटी मिनट्स ऑफ लव

1915 35. द बैंक

36. बाय द सी

37. कर्मेन

38. द चैम्पियन

39. हिज न्यू जॉब

40. इन द पार्क

41. ए जिटनी इलोपमेंट

42. ए नाइट इन द शो

43. शांगहाइड

44. द ट्रैम्प

45. ए वोमन

46. वर्क

1916 47. बिहाइंड द स्क्रीन

48. द काउंट

49. द फायरमैन

50. द फ्लोरवॉकर

51. वन ए एम

52. द पॉनशॉप

53. पोलीस

54. द रिंक

55. द वैगाबांड

1917 56. द क्योर

57. ईजी स्ट्रीट
58. द इम्मिग्रेण्ट

1918 59. द बॉण्ड
60. ए डॉग्स लाइफ
61. शोल्डर आर्म्स
62. ट्रिपल ट्रबल

1919 63. चार्ली द बार्बर

64. ए डेज प्लेशर
65. सनीसाइड

1921 66. ए आइडल क्लास
67. द किड

1922 68. पे डे

1923 69. द पिलग्रिम
70. ए वोमन ऑफ पेरिस

1925 71. द गुड फॉर नथिंग
72. द गोल्ड रश

1928 73. द सर्कस

1931 74. सिटी लाइट्स

1936 75. मॉडर्न टाइम्स

1940 76. द ग्रेट डिक्टेटर

1947 77. मांसर वारडॉक्स

1952 78. लाइमलाइट

1957 79. ए किंग इन न्यूयॉर्क

1967 80. ए काउंटेस फ्रॉम हांग-कांग

चार्ली और राजनीति

जीवन में बचपन से ही अथाह दुखों के बीच पलते-बढ़ते हुए, प्रेम व विवाह में असफलता के तमाम झंझावातों के बीच वे अपने आत्मविश्वासपूर्ण संघर्ष के बल पर आगे बढ़ते रहे। उनकी संघर्ष-भरी जीवन-गाथा उन्हें उस समय भी डिगा नहीं पाई जब वे धनवान और प्रसिद्धि के उच्चतम शिखर पर थे। वे इस शिखर के मोहपाश में फंसे बगैर तमाम हमलों के बावजूद सामाजिक सरोकारों, जनपक्षधरता और मानवता के लिए जीवन के अन्तिम समय तक लड़ते रहे। वे कम्युनिस्ट होने के निराधार आरोप और निर्वासन के बावजूद कम्युनिस्टों के प्रति समर्थन की प्रतिबद्धता और उनके द्वारा किए गए काम की प्रशंसा से कभी नहीं डिगे।

द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान हिटलर की नाजीवादी सेनाएं पूरी दुनिया में कोहराम मचाए हुए थीं। सोवियत संघ की लाल सेना और वहां की बहादुर जनता जान-माल की भारी तबाही के बावजूद नाजीवादियों से संघर्ष कर रही थी। उसी दौरान सैन फ्रांसिस्को से अमेरिकन कमेटी फॉर रशियन वॉर रिलीफ की तरफ से फोन आया कि कल होने वाले सम्मेलन में वे मुख्य वक्ता की हैसियत से बोलने के लिए आमंत्रित हैं। चार्ली ने तुरन्त हां कर दी और सैन फ्रांसिस्को पहुंच गए। सभा में चार्ली का नम्बर सबसे बाद में आया। उनके पहले जितने भी वक्ता बोले ऐसे संभल-संभलकर बोल रहे थे मानो उन पर कोई पहरा हो।

चार्ली ने शुरुआत की, "कॉमरेड्स!" और पूरा हॉल ठहाके लगाकर हंसने लगा। चार्ली ने फिर कहा, "मैं कह रहा हूं, कॉमरेड्स। मेरे लिए इस शब्द का मतलब बहुत व्यापक है।" लोग फिर हंसे, पर उनकी हंसी तालियों की गड़गड़ाहट में तब्दील हो गई।

"मेरे ख्याल में हॉल में कई रूसी लोग भी हैं। मैं उन्हें बता दूं- उनके देश में, उनकी जमीन पर जिस तरह हजारों रूसी लोग शांति और लोकतंत्र की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं, उसने पूरे रूस को

गरिमामय बना दिया है, इतना कि मैं आपको कॉमरेड कहूं तो यह आपके लिए सबसे बड़ा सम्मान है।"

लोग इतना अभिभूत हो गए कि उन्होंने देर तक खड़े होकर तालियां बजाईं।

"मैं कोई कम्युनिस्ट नहीं हूं, मैं सिर्फ एक इंसान हूं और मेरे ख्याल से मुझे पता है कि इंसानों के बीच क्या रिश्ता होना चाहिए। कम्युनिस्ट किसी भी दूसरे आदमी से अलग नहीं होते, भले ही वे अपना हाथ खो दें या टांग। उन्हें भी वैसी ही तकलीफें होती हैं जैसी हमें। वे भी हमारी तरह जीते-मरते हैं। किसी कम्युनिस्ट की मां भी वैसी होती है, जैसी हम सबकी मां। जब उसे अपने बेटे के कभी न लौटने की दुखद सूचना मिलती है, तो वह उसी तरह रोती है, जैसे कोई भी मां रोएगी। यह सब जानने के लिए मेरा कम्युनिस्ट होना जरूरी नहीं। सिर्फ इंसान हो जाने से यह सब पता चल जाता है। इस समय हजारों रूसी मांएं रो रही हैं, और हजारों रूसी सपूत मर रहे हैं…।"

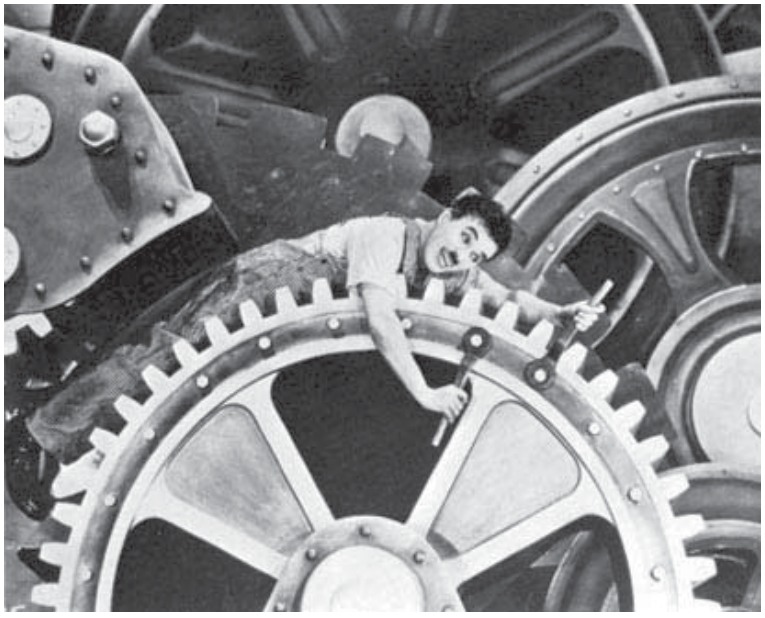

अमूमन बहुत कम बोलने वाले चार्ली उस दिन चालीस मिनट तक बोले। उन्होंने रूस की हिम्मत की दाद दी और नाजियों के खिलाफ उसकी सहायता की अपील की। मजदूरों और उत्पीड़ित जन के प्रति उनके विचार सिद्ध करते हैं कि वह मजदूरों के साथ खड़े थे और उन्हें नाजीवाद के खिलाफ संगठित करने की वकालत करते थे। उन्होंने साफ-साफ कहा, "कारखानों में बैठे लोग, खेतों में काम करते लोग, दर-दर घूमते नागरिक, जब तक एक होकर संघर्ष नहीं करेंगे, असली अमन नहीं आएगा।"

इंग्लैड में पुराने दोस्त उनसे बार-बार पूछते कि अमेरिकी सरकार उनसे खफा क्यों हो गई? एक दिन उन्होंने जवाब दिया, "उनकी नजर में मैं कम्युनिस्ट हूं। हालांकि मैं नहीं हूं, पर मैं उनसे नफरत भी नहीं करता हूं। मेरी नजर में वे भले लोग हैं, दुनिया को अच्छा और भला बनाने के लिए संघर्षरत। मुझे अमेरिका भी पसंद है, पर सरकारी बाबुओं ने उसे न रहने लायक बना दिया है। वहां देशभक्ति कुछ ज्यादा ही तेज हो गई है। अगर यही आलम रहा, तो एक दिन वह देश लोकतंत्र की आड़ में फासिस्ट हो जाएगा।"

50-60 साल पहले चार्ली ने अमेरिका के बारे में जो कुछ कहा था, आज उनमें से कई बातें सही सिद्ध हुई हैं। भले ही घोषित रूप में अमेरिका को एक फासीवादी देश न कहें लेकिन इराक, अफगानिस्तान, कोरिया, क्यूबा, वियतनाम और न जाने कहां-कहां उसने जो कुछ किया वह किसी मायने में फासीवाद से कमतर नहीं। 1991 के खाड़ी-युद्ध के बाद इराक में जो तबाही हुई उसे क्या कहेंगे? 5-10 लाख इराकी बच्चों का तिल-तिल मरना क्या है? क्या यह लोकतंत्र ही आड़ में अमेरिका का फासीवाद नहीं है'' मार्च 2003 से अब तक लाखों इराकी मर चुके हैं। यह किसकी वजह से? इसे क्या नाम देंगे? हिटलर ने तो खुलेआम फासीवाद का परचम फहराया था। वह तो मानवता का ऐसा दुश्मन था जो साफ-साफ पहचाना जा सका। लेकिन

बुश को क्या कहेंगे? लोकतंत्र, आजादी के नाम पर इराक, अफगानिस्तान ही नहीं, पूरी दुनिया में एक प्रकार का फासीवाद अमेरिका द्वारा थोपा जा रहा है। कोई कुछ भी कहे, बुश ही आज का हिटलर है।

"मैं हर उस आदमी से नफरत करता हूं जो दूसरों के लिए समस्या पैदा करता है। कोई मुझे यह कहे कि तुम इसके लिए या उसके लिए अपनी जान दे दो तो मैं ऐसा नहीं कर सकता। देशभक्ति के नाम पर भी नहीं। देशभक्ति सबसे बड़ा पागलपन है। यह मनुष्यता को कट्टरता की ओर ले जा सकती है। मुझे ऐसी देशभक्ति से चिढ़ है। मैं किसी राजा, राष्ट्राध्यक्ष या तानाशाह की जिद पूरी करने के लिए युद्ध नहीं कर सकता। मैं उन विचारों के लिए कतई नहीं लड़ सकता, जिनमें मेरी आस्था नहीं। देशभक्ति को कोई कैसे स्वीकार कर सकता है, जब 60 लाख यहूदियों को नस्लीय शुद्धता के नाम पर मार डाला गया हो! कोई कह सकता है कि यह जर्मनी में हुआ था। पर मैं कहता हूं कि ऐसा हर देश में छोटे-बड़े रूप में मौजूद है। देशभक्ति अंततः नाजीवाद में बदल जाती है।"

जब रूस और जर्मनी की सेनाएं युद्ध के मैदान में थीं उसी समय चार्ली के पास न्यूयॉर्क में एक सभा को संबोधित करने का प्रस्ताव आया। इस प्रस्ताव पर वे थोड़ा असमंजस में थे कि क्या करें। उनके दोस्त जैक वार्नर ने कहा कि वे बहुत भड़काऊ भाषण देते हैं, वे सभा में न जाएं तो अच्छा है। दोस्त की सलाह को नकारते हुए चार्ली सभा में पहुंचे। सभा में कई वक्ता थे, इनमें फिल्मों के महा-निर्देशक आर्सन वेल्स भी थे। वेल्स ने जब देखा कि सभा में कई सारे पूंजीवादी विचारधारा के पैरोकार लोग भी बैठे हैं तो उन्होंने अपनी बात बहुत असमंजस में और दबी जुबान से कही। इससे चार्ली गुस्से में आ गए और उन्होंने पूंजीवादी व्यवस्था का मजाक उड़ाते हुए ऐसा भाषण दिया कि लोगों को सांप सूंघ गया। इस सभा में कांसटेंट कॉलियर भी थीं। उन्होंने कहा, "तुम अगर इसी तरह बेरोकटोक ढंग से भाषण देते रहे तो 5 साल के अन्दर पूरा अमेरिका कम्युनिस्ट हो जाएगा।"

इस सबके बावजूद चार्ली बार-बार कहते थे कि वे कम्युनिस्ट नहीं हैं। इस भाषण के बाद न्यूयॉर्क का धनवान तबका, जो उनका दीवाना था, उनसे कटने लगा। उनके पास अब आलीशान दावतों के न्यौते कम आते, लेकिन दूर-दराज गांवों के लोग अपनी समस्याओं के बारे में ज्यादा खत भेजने लगे। बुद्धिजीवियों के जो खत आते भी थे उनमें ज्यादातर युद्ध, कम्युनिज्म, सोवियत संघ, नाजीवाद और अमेरिका की राजनीति पर सवाल-जवाब और जिरह होते थे।

आप कितने ही महान और धनवान क्यों न हों, आप जैसे ही उत्पीड़ित अवाम के पक्ष में खड़े होते हैं वैसे ही शासक वर्ग और पूंजीवादी विचारधारा आपको कटघरे में खड़ा कर देते हैं। चार्ली के साथ भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही उन्होंने युद्ध की खिलाफत की, नाजीवाद का विरोध किया और कम्युनिस्टों के पक्ष में बोले, वैसे ही उनकी फिल्मों का कायल अमेरिका, पूंजीवादी विचारधारा के पक्षधर लोग, मीडिया और वहां का शासक वर्ग उनके पीछे पड़ गए।

वे जहां भी जाते उनसे एक ही सवाल किया जाता कि क्या आप कम्युनिस्ट हैं?

चार्ली इन सारे सवालों से बिल्कुल नहीं घबराते। उन्होंने हर सवाल का बिल्कुल साफ-साफ ढंग से जवाब दिया। जब कुछ लोग उनसे पूछते कि आप इतने ज्यादा नाजीवाद के विरोधी क्यों हैं? तो उनका साफ जवाब था, "मैं नाजी-विरोधी इसलिए हूं कि नाजी मनुष्य विरोधी है।" जैसे ही उत्तर पूरा होता, लोग अगला सवाल दाग देते। तो फिर आप जरूर यहूदी हैं? इस प्रश्न पर चार्ली जितनी समझदारी से जवाब देते हैं यह सिद्ध करता है कि वे मानवीय विचारों के प्रति कितनी गहराई से आस्था रखते थे। उनका जवाब होता, "नाजीवाद का विरोध करने के लिए यहूदी होना जरूरी नहीं है। अगर आप एक जागरूक इंसान और मानवता के हितकारी होंगे तो आप जरूर नाजीवाद के विरोधी होंगे।"

इस सब के बीच में चार्ली कभी-कभी सोचते कि मैं तो एक

कलाकार हूं, कोई राजनैतिक नेता नहीं! लोग मेरे पीछे क्यों पड़े हैं? उन्हें लगा कि फिल्मों की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। लेकिन उन्होंने तय किया कि कोई कुछ भी कहे, वे युद्ध और नाजीवाद का विरोध जारी रखेंगे और मानवता की रक्षा के लिए जो भी आगे आएगा वे उसका पक्ष लेने में कभी नहीं डिगेंगे··· चाहे वे कम्युनिस्ट ही क्यों न हों।

मैकार्थीवाद का साया

1950 में अमेरिका की कम्युनिस्ट विरोधी मुहिम को एक उन्मादपूर्ण चेहरा मिल गया। यह चेहरा था जोसेफ मैकार्थी नामक एक सिनेटर का। मैकार्थी ने घोषणा की कि अमेरिकी विदेश विभाग के पास दो सौ कम्युनिस्टों की एक ऐसी सूची है जिनपर अमेरिका-विरोधी गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगाया जाता है। इस दौरान सूची में शामिल व्यक्तियों को मैकार्थी और उसके सिपहसलारों के सामने पेश होना पड़ता। हर व्यक्ति से सैकड़ों सवाल-जवाब किए जाते। उन्हें अपमानित और जलील किया जाता। चारों ओर झूठ और तिकड़म का बोलबाला था। हॉलीवुड के कई सारे लोगों ने इस पागलपन के विरुद्ध आवाज बुलन्द की, लेकिन कई सारे अपना सब कुछ खो बैठे। उन्हें कभी दुबारा हॉलीवुड में काम नहीं मिला। इसी बीच चार्ली ***लाइमलाइट*** फिल्म की प्रीमियर के लिए लंदन चले गए। जहाज में सवार होने के दूसरे ही दिन घोषणा हुई कि अमेरिका के एटॉर्नी जनरल ने चार्ली का अमेरिका में प्रवेश निषिद्ध कर दिया। उन्हें अमेरिका विरोधी गतिविधि यों में लिप्त होने और कम्युनिस्टों का पक्ष लेने के आरोप में अमेरिका से निर्वासित कर दिया गया। निर्वासन के दौर में चार्ली पर विद्वेषपूर्ण हमले जारी रहे। एफ.बी.आई. के जासूस कुत्तों की तरह चारों तरफ ऐसे सूंघ रहे थे कि कहीं कोई ऐसी सामग्री मिल जाए जिससे चार्ली को और ज्यादा बदनाम किया जा सके। चार्ली वापस अमेरिका नहीं आ

सकते थे। इसलिए उनका परिवार 1953 में स्विट्जरलैण्ड चला गया।

शांतिदूत का सम्मान

अमेरिका छोड़ने के बाद चार्ली जीवन के दूसरे रास्ते की ओर चल पड़े थे। पेरिस और रोम में उनका स्वागत विजेताओं की तरह हो रहा था। राष्ट्रपति, मंत्री, विद्वान, जनता– सब के सब चार्ली की मेहमान-नवाजी कर रहे थे। फ्रांसीसी सरकार ने चार्ली को 'लीजन ऑफ ऑनर' की पदवी देकर सम्मानित किया। मई 1954 में चार्ली को विश्वशांति परिषद की ओर से युद्ध के खिलाफ शांति की मुहिम चलाने और मानवता की सेवा के लिए शांति पुरस्कार से नवाजा गया। पुरस्कार में मिली धनराशि को उन्होंने पेरिस और लन्दन के गरीबों की सहायता हेतु दान कर दी। इसी बीच उन्होंने ***ए किंग इन न्यूयॉर्क*** नामक एक फिल्म बनानी शुरू की। यह फिल्म मैकार्थीवाद पर एक करारा प्रहार थी। अफसोस कि यह फिल्म सफल नहीं हुई। कारण साफ था कि इस फिल्म में जो कुछ भी कहा गया था वह अमेरिका की नीतियों, उसके कम्युनिस्ट विरोध और पूंजीवादी व्यवस्था पर करारा हमला था।

अमेरिका में चार्ली के खिलाफ हुई साजिशों के बाद वे दुनिया भर के नेताओं व विश्वविख्यात लोगों से मिले। इनमें प्रमुख थे– चीन के प्रधानमंत्री चाउ एन लाई, भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल, सोवियत संघ के राष्ट्रपति निकिता ख्रुश्चेव, महान पेंटर पाब्लो पिकासो, लेखक ज्यां पाल सार्त्र··· चार्ली इन सबसे ढेर सारी बातें करते-देश, दुनिया, राजनीति, समाजवाद, पूंजीवाद, युद्ध, शांति, मानवता, दर्शन, संगीत, साहित्य, फिल्म, कला··· सबकुछ चर्चा में होता। चार्ली हर उस आम और खास के चहेते थे जिसमें मानवीय संवेदना थी। सोवियत संघ की समाजवादी क्रांति के जननायक लेनिन ने एक बार कहा था- "चैप्लिन एकमात्र वह शख्सियत हैं जिनसे मिलने की मेरी चाहत पूरी नहीं हो पाई।"

चार्ली की कुछ मुलाकातें वाकई यादगार हैं। कोरियाई संकट के

दौरान जब पूरी दुनिया एक खतरनाक मोड़ पर खड़ी थी तभी जेनेवा में चीन के प्रधानमंत्री चाउ एन लाई ने चार्ली की फिल्म ***सिटी लाइट्स*** देखने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने चार्ली को खाने पर आमंत्रित किया– "जब हम वहां पहुंचे तो मेरी हैरानी की सीमा न रही। मैंने देखा कि चाउ एन लाई हमारे स्वागत में बाहर सीढ़ियों पर खड़े इंतजार कर रहे थे। उस रात उन्होंने हमें माओ त्से तुंग की पीकिंग में जीत की दिल को छू लेने वाली कहानी सुनाई। वहां दस लाख चीनी लोग माओ के स्वागत में खड़े थे। एक बहुत विशाल मैदान के एक सिरे पर पंद्रह फीट ऊंचा बड़ा मंच बनाया गया था। जब माओ पीछे से सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आए तो सबसे पहले उनका सिर नजर आया। दसियों लाख लोगों ने पूरे जोश के साथ चिल्लाकर उनका स्वागत किया। जैसे-जैसे वे पूरे दिखते गए शोर बढ़ता ही गया। जब चीन के नवजनवादी क्रांति के अगुआ माओ ने विशाल जनसमूह देखा तो वे एक पल के लिए अचंभित से खड़े रह गए। उन्होंने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढका और फूट-फूटकर रोए।"

"चाउ एन लाई चीन के विख्यात लांग मार्च के दौरान माओ के साथ कठिनाइयों और दिल दहला देने वाली कई घटनाओं में शरीक थे। मैं जब उनके मेहनती खूबसूरत चेहरे की ओर देख रहा था तो हैरान था कि जन-संघर्षों के दौरान वे कितने शांत और ऊर्जावान दिखते होंगे।"

"मैंने चीन के बारे में कई रोचक घटनाएं सुनी थीं कि किस तरह से कम्युनिस्टों को तीसरे दशक में भीतरी चीन में काफी भीतर तक

धकेल दिया गया था, फिर किस तरह से माओ त्से तुंग की अगुवाई में बिखरे कम्युनिस्ट एकजुट हुए थे। जैसे-जैसे वे पीकिंग की तरफ बढ़ते गए, क्रांति का कारवां बढ़ता गया। कम्युनिस्टों ने साठ करोड़ चीनी जनता का विश्वास वापस जीता।"

"डिनर के समय मैंने चीन के भविष्य के लिए जाम उठाया और चाउ एन लाई से कहा, हालांकि में कम्युनिस्ट नहीं हूं लेकिन मैं चीनी जनता और सब लोगों की खुशहाल जिन्दगी के लिए उनकी उम्मीदों और इच्छाओं में पूरे दिल से उनके साथ हूं।"

1962 में बचपन में उचित शिक्षा से वंचित चार्ली को इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड और डरहम विश्वविद्यालयों ने डाक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया।

1965 में चार्ली को जन्म दिन पर अपने प्यारे भइया सिडनी के देहांत की खबर मिली। उन्हें अपने भइया को खोने का बेहद गम था। सिडनी ही वह इन्सान था जो चार्ली के हर दुख-सुख का हमसफर था।

1971 में चार्ली को पेरिस में फ्रांस के प्रतिष्ठित पदक ***ग्रांद मेदाइ द वेर्मेइ*** से सम्मानित किया गया।

1972 में अमेरिका में मैकार्थीवाद के काले बादल छट चुके थे। एक बार फिर अमेरिका होश में आया। उसे गलती का एहसास हुआ। उसने फिर से निर्वासित चार्ली को अमेरिका ने गले लगाया। न्यूयॉर्क की जनता ने चार्ली का अभूतपूर्व स्वागत किया।

4 मार्च 1975 को एलिजाबेथ द्वितीय ने ब्रिटेन के सर्वोच्च ब्रिटिश सम्मान नाइट से चार्ली चैप्लिन को सम्मानित किया।

अन्तिम समय

1977 में चार्ली एक ओर फिल्म बनाने का विचार कर रहे थे, लेकिन अब वे 88 वर्ष के हो चुके थे। उनका शरीर कमजोर हो गया था। "काम ही मेरा जीवन है और मुझे जीवन से प्यार है।" यह कहने वाले दुनिया के महानतम अभिनेता और मानवता के पक्षधर चार्ली

चैप्लिन सबको हंसाते-रुलाते 25 दिसम्बर 1977 को दुनिया से चल बसे।

चार्ली हमारे बीच आज जरूर नहीं हैं, लेकिन उनकी छवि अमर हो गई। उनके अदना-सा कद में लिपटा कसा हुआ कोट, छड़ी, हैट, लम्बी पतलून, लम्बे जूते और उनकी मूंछें... शायद ही दुनिया में भुलाई जा सकेंगी। संघर्षपूर्ण जीवन और भीषण आलोचनाओं के बावजूद मानवता के हित में की गई उनकी पहलकदमियों को कौन भुला पाएगा! आम इंसान की संवेदनाओं से रची-बसी फिल्में याद दिलाती रहेंगी कि चार्ली चार्ली नहीं... चितचोर थे।